भाजपाई कृष्णपाल के मुकाबले कांग्रेस.....

पेज एक का शेष

कांग्रेस से भाजपा में गये और भाजपा से कांग्रेस में आये ऐसे नेता की क्या गारंटी है कि वह चुनाव जीत कर या हार कर पुन: अपनी निष्ठा नहीं बदलेगा। ऐसे लोग़ों की निष्ठा जनता के प्रति तो क्या अपनी पार्टी के प्रति भी कभी नहीं रहती। पार्टी तो ये लोग ऐसे बदलते हैं जैसे कपड़े बदलते हैं। इनकी असली निष्ठा अपने लूट कारोबार को बनाये रखने व आगे बढाने के प्रति ही रहती है। यह काम सत्तारूढ दल यानी सरकार के साथ रह कर ही हो सकता है। ऐसे लोग कभी भी सत्ता का दामन छोड़ कर जन संघर्ष का मार्ग नहीं पकड़ सकते।

अपनी शैक्षणिक योग्यता अंडर मैट्रिक बताने वाले अवतार ने कभी किसी स्कूल में दाखिला नहीं लिया। एक भी कक्षा पास नहीं की। जैसे-तैसे 'अवतार' लिखना सीखा है। इसके बावजूद अपनी असल योग्यता अनपढ़ बताने के बजाय अंडर मैट्रिक बताते हैं जिसका मतलब नौवीं नहीं तो आठवीं पास तो होगा ही। किसी जमाने में इनके बड़े भाई संता ने अरावली खदानों के एक बड़े लीज़-होल्डर एसएल शर्मा की चाकरी शुरू की थी। दरअसल शर्मा स्थानीय गूजरों से दुखी था, इसलिये उसने संता को टुकड़ा डाला था। वहां से शुरू होकर धीरे-धीरे इन भाईयों ने पूरी खदानों पर कब्ज़ा कर लिया। **'उल्लू का वाहन लक्ष्मी'** वाली कहावत चरितार्थ करते हुए लक्ष्मी इन भाईयों पर खूब मेहरबान हुई। इसी दौरान संता की रिश्तेदारी जिस लाल सिंह से हुई थी वह नारायणगढ से विधायक व हरियाणा सरकार में मंत्री भी हो गये जबकि रिश्तेदारी होने से पूर्व लाल सिंह कांग्रेस कार्यालय में चपरासी थे। अपने तजुर्बे के आधार पर लाल सिंह ने अवतार व करतार को समझाया कि राजनीति जैसा बढिया कोई धंधा नहीं है। पैसे का इस्तेमाल करो और राजनीति में घुस कर मलाई खाओ। बस फ़िर क्या था, इन्होंने राजनीति में दांव लगाना शुरू कर दिया। शुरू में छोटे-छोटे काम कम्बल बांटना, सिलाई मशीने आदि बांटने से काम करते-करते एक दिन मुख्यमंत्री देवी लाल की जन सभा कर डाली। अपने सैंकड़ों ट्रक व पहाड़ की सारी लेबर से पंडाल भर दिया। देवी लाल को चांदी का हुक्का, मुकुट व एक बेंत देकर उनके पेट में जूतों समेत घुस बैठे । देवी लाल परिवार पर अंधाधुंध पैसा खर्च करने से उनकी आंखें चुंधिया गयी और एक दिन अवतार को बिना विधायक बने ही अपनी सरकार में मंत्री बना दिया। उसके बाद अवतार ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

सत्ता के यही वे चस्के हैं जो रह-रह कर याद आते हैं। अपने पिछले सांसद काल में जनता के लिये तो इन्होंने कुछ नहीं किया हां लगभग हर माह ज़िले के अधिकारियों की एक बैठक लेकर उन्हें सार्वजनिक रूप से धमकाने का काम जरूर ये साहब करते रहे। इसी तरह की धमकियों की आड़ में इनके तमाम काले-पीले धंधे चलते रहते थे। अवैध खनन करने से कोई अधिकारी इन्हें रोकने की गुस्ताखी नहीं कर सकता था। जिस खाली ज़मीन पर ये 100-200 ट्रक पत्थर डाल देते थे वह इनकी हो जाती थी। सराय थाना के इलाके में इन्होंने जम कर अवैध कब्ज़े करे व कराये। पुलिस समेत हर महकमे का खूब खुल कर दुरुपयोग किया। बीते 5 साल से सत्ता की दूरी झेल रहे अवतार के लिये सांसद बनना जीवन मरण का प्रश्न है।

अवतार और कृष्णपाल के मुकाबले बतौर विकल्प उतरे 'आप' के नवीन जय हिन्द को कभी भाजपाई और कभी कांग्रेसी हथकंडे अपनाते देखा जा रहा है।

रिश्ते ही रिश्ते

माँ झण्डे वाली मैरिज ब्यूरो

OFFICE : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD

CONTACT : ANSHU DUA

(M) : 9990589008, 7982962823, 9891124022

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्क़त हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5**
2. **प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन**
4. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे**
5. **राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने**
6. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास**
7. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**

गतांक की चीर-फ़ाड़

फरीदाबाद शहर में मंत्री कृष्णपाल व विधायक सीमा को दिखाया गया आइना

डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

मज़दूर मोर्चा के 21-27 अप्रैल 2019 के अंक में राजनीतिक, एतिहासिक, प्रशासनिक, सामाजिक, साहित्यक व आर्थिक मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण समाचार प्रकाशित हुए हैं। राष्ट्रीय स्वयं संघ (आरएसएस) व भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का हमेशा मकसद रहा है कि देश के संविधान को बदलकर संसदीय शासन प्रणाली की जगह अमेरिका की तर्ज पर अध्यक्षीय शासन प्रणाली स्थापित की जाए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने शासन काल में संघ परिवार व मीडिया की मदद से भाजपा व प्रशासन पर अपना एकछत्र प्रभुत्व स्थापित कर लिया और प्रचार किया गया कि मोदी है तो भाजपा हैऔर देश मोदी जी के हाथों में सुरक्षित है। फलस्वरूप वर्तमान लोकसभा चुनाव में कुछ मतदाता मुखर होकर कह रहे हैं कि हम भाजपा को तो नहीं चाहते लेकिन केन्द्र में मोदी को चाहते हैं। दूसरी तरफ़ कुछ ऐसे मतदाता भी मिले जिनका कहना है कि मोदी जी ने देश का सत्यानाश कर दिया, हम मोदी को वोट नहीं देंगे।

वर्तमान लोकसभा चुनाव के मद्देनज़र 'चुनाव का रूख-पाकिस्तान साथ दे गया तो ठीक वरना मोदी को झोला उठाकर जाना ही पड़ेगा' में मोदीजी की राजनीतिक स्थिति का सटीक विश्लेषण किया गया है। मोदी जी ने अपने चुनावी भाषणों में अन्ध-राष्ट्रवाद, पाकिस्तान में बालाकोट एयरस्ट्राइक, पाकिस्तान में घुसकर आतंकवादियों का सफ़ाया करना आदि मामलों को प्रमुख मुद्दे बना रखे हैं। ऐसा लगता है कि लोकसभा चुनाव देश में राजनीतिक सत्ता स्थापित करने हेतु नहीं बल्कि भारत और पाकिस्तान के बीच हो रहे हैं।

आरएसएस ने अपने एक आंकलन में पाया कि बालाकोट एयरस्ट्राइक व मोदी सरकार की लोकप्रियता का जमीनी स्तर पर सीमित प्रभाव है, इसलिये भाजपा व भाजपा प्रत्याशियों को निर्देश दिया है कि वे अपने-अपने क्षेत्र के स्थानीय मुद्दों पर केंद्रित करें तथा प्रचार अभियान को और तेज करें।

ईवीएम से चुनाव कराने पर विवाद बढ़ता ही जा रहा है। वर्तमान चुनाव के दौरान भी कई जगह से ईवीएम खराब होने की रिपोर्ट आई हैं। इसके अतिरिक्त बैलेट पेपर से मतदान की तरह ईवीएम से भी मतदान के दौरान फोलिंग पार्टी की मिलीभगत से फ़र्जी मतदान होने की घटनायें हो रही हैं जिस पर मोदी सरकार व भाजपा ने तंज कसे हैं। स्मरण रहे कि जब भाजपा विपक्ष में थी तब भाजपा ने भी ईवीएम की विश्सनीयता पर सवाल उठाए थे।

चुनाव अचार संहिता का उल्लंघन खुले तौर पर हो रहा है जिस पर रोक लगाने में चुनाव आयोग पंगु व लाचार साबित हो रहा है, जिसकी 'कमजोर को ही खा सकता हूं...ऐसा शेर हूं मैं: चुनाव आयोग' में विवेचना की गई है। स्वयं प्रधानमंत्री मोदी, उनकी सरकार के मंत्री तथा भाजपा के अन्य नेता चुनाव आचार संहिता व चुनाव आयोग के निर्देशों की कोई परवाह नहीं करते। चुनाव आयोग के निर्देश के बावजूद मोदीजी बालाकोट एयरस्ट्राइक, पाकिस्तान आदि को लगातार मुद्दा बनाए हुए हैं। रविवार 21 अप्रैल को मोदीजी ने गुजरात के पाटन में चुनावी रैली में कहा कि उन्होंने पाकिस्तान को चेतावनी दी थी कि अगर उसने पायलट अभिनंदन वर्धमान को नहीं लौटाया तो वह 'कत्ल की रात होती'। एक राजनेता को ऐसा अमर्यादित वक्तव्य शोभा नहीं देता। इन नेताओं को सबक सिखाने के लिये चुनाव आयोग को कारगर कदम उठाने चाहिये। लोकतंत्र की मर्यादा को बचाने के लिये सख्ती ही एकमात्र उपाय है।

सोशल मीडिया में खासकर हिन्दू-मुस्लिम संबंधित झूठी पोस्ट लिखने का प्रचलन तेज़ी से बढ़ता जा रहा है। मालेगांव धमाके की आरोपी साध्वी प्रज्ञा ठाकुर के बारे में पिछले लोकसभा चुनाव के नजदीक कई पोस्ट लिखी गई थी कि कांग्रेस उनको हिन्दू होने की सज़ा दे रही है तथा जेल में उनको प्रताड़ित किया जा रहा है जिससे उनके पैर खत्म हो गए हैं, जिसको 'प्रज्ञा और भाजपा' में उज़ागर किया गया है।

गौरतलब है कि एनआईए की अभियोजन पक्ष की वकील साल्वन ने बयान दिया है कि प्रज्ञा को यातना देने के आरोपों की जांच में कोई सबूत नहीं मिले थे। प्रज्ञा अस्वस्थता के आधार पर अदालत से जमानत पर जेल से बाहर आई थी। लेकिन प्रज्ञा बिल्कुल स्वस्थ है जो भाजपा प्रत्याशी के तौर पर भोपाल से लोकसभा चुनाव लड़ रही है तथा चुनाव प्रचार भी कर रही है कि प्रज्ञा ठाकुर बिमारी के झूठे बहाने पर अदालत से जमानत लेकर जेल से बाहर आई थी। शहीद हेमन्त करकरे पर विवादित टिप्पणी करके वे झूठे आरोप लगाकर प्रज्ञा ठाकुर हिंदुओं की भावनाओं को भड़काकर धार्मिक ध्रुवीकरण करने का प्रयास कर रही है।

परंतु सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन व सुप्रीमकोर्ट एडवोकेट्स ऑन रिकार्ड एसोसिएशन द्वारा यौन शोषण के आरोपों की जांच के लिये एक पैनल गठित करने की मांग पर जस्टिस बेडबड़े की अध्यक्षता में सुप्रीम कोर्ट के तीन जजों की एक कमेटी गठित की गई तथा मामले की गंभीरता को देखते हुए

सुप्रीम कोर्ट में क्लर्क के तौर पर काम कर चुकी महिला द्वारा चीफ़ जस्टिस रंजन गोगोई पर यौन शोषण का आरोप लगाने तथा छुट्टी के दिन सुप्रीम कोर्ट के 22 जजों के घर एफिडेविट भेजे गये जिस पर चीफ़ जस्टिस गोगोई ने आनन-फ़ानन में अपनी अध्यक्षता में एक विशेष बैंच गठित कर इस मामले की सुनवाई करते हुए आरोपों को खारिज किया और कहा कि चीफ़ जस्टिस की अदालत को निष्क्रिय करने की यह बहुत बड़ी साजिश है। क्योंकि आगामी सप्ताह में अहम मामलों जैसे कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के खिलाफ़ राफ़ेल मामले में विवादित कमेंट पर अवमानना याचिका, प्रधानमंत्री मोदी की बायोपिक पर बैन के खिलाफ़ याचिका, शारदा चिटफंड मामले में कलकत्ता के पूर्व कमिश्नर को हिरासत में लेकर पूछताछ करने के लिये सीबीआई की अर्जी और असम में नागरिकता के मामले की सुनवाई होनी है। इस पूरे प्रकरण की 'यौन शोषण का आरोप: जस्टिस गोगोई ने कहा, साजिश के पीछे है बड़ा हाथ' में समीक्षा की गई है।

कोर्ट ने आईबी, सीबीआई तथा पुलिस विभाग को साजिश की तह तक जाने के लिये जांच करने को कहा है।

अमृतसर के जलियांवाला बाग के क्रूर नरसंहार के सौ वर्ष पूरे होने पर 'क्रूरतम नरसंहार के सौ वर्ष (1919-2019) पर विशेष समीक्षा-जलियांवाला संघर्ष अभी जारी है' के जरिये औपनिवेशिक क्रूरताओं के ऐसे प्रकरणों और मुख्य धारा के विभिन्न पहलूओं की आलोचनात्मक व्याख्या की गई है। शैलट एक्ट का विरोध करने पर दो प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी सेफुद्दीन किचलू और सत्यपाल की गिरफ़्तारी की गई थी और 13 अप्रैल 1919 को आयोजित बैसाखी रैली उनकी रिहाई की मांग कर रही थी। साम्राज्यवादी दमन का विरोध और उनकी रिहाई के लिये संघर्ष करने वाले प्रदर्शनकारियों को उनके धार्मिक विश्वासों से कोई सरोकार नहीं था। गौरतलब है कि भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में लोगों की स्वतंत्रता को कुचलने के लिये रौलट एक्ट जैसे खतरनाक कानून लागू कर रखे हैं।

'सीजेआई से पत्रकार पूछे सवाल, अब डेमोक्रेसी बचाने और डेंजर से बचने के लिये क्या किया जा रहा है:इंदिरा जयसिंह' में 'सत्ता की सूली' पुस्तक के जरिये देश की राजनीतिक और व्यवस्था की सच्चाई से पाठकों को रूबरू कराया गया है तथा प्रजातंत्र व नागरिकों के मूल अधिकारों की सुरक्षा के लिये चीफ़ जस्टिस ऑफ़ इंडिया से आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। तथ्यों, दस्तावेज़ों व प्रकाशित खबरों के आधार पर विभिन्न हत्याओं की परत दर परत सच्चाई खोली गई है। नरेन्द्र मोदी समेत सत्ता में बैठे लोग़ों से जुड़ी कई घटनाओं की चर्चा की गई है तथा स्पष्ट किया गया है कि सत्ता कैसे पुलिस का दुरूपयोग करती है।

'फ़रीदाबाद शहर में मंत्री कृष्णपाल व विधायक सीमा को दिखाया गया आइना' में विधायक सीमा त्रिखा व पार्षद् जसवंत सिंह के सहयोग से 5 नम्बर मार्केट में बांके बिहारी मंदिर के निकट भीड़-भाड़ वाले निरंकारी चौक पर कृष्णपाल की नुक्कड़ सभा करने के असफ़ल प्रयास का पर्दाफ़ाश किया गया है। इसी तरह बहुजन समाज पार्टी से निष्कासित पृथला विधानसभा क्षेत्र के विधायक टेक चंद शर्मा व बघौला गांव के सरपंच द्वारा आयोजित चुनावी सभा भी फ्लॉप हो गई थी। समरण रहे कि लोकसभा चुनाव प्रभारी कलराज मिश्र की विजय संकल्प सभा में कृष्णपाल की दावेदारी का विरोध हुआ था। ऐसा प्रतीत होता है कि गूजर को पार्टी के भीतरघात का भी मुकाबला करना पड़ेगा।

भाजपा के चुनावी संकल्प पत्र में बुलेट ट्रेन का जिक्र न होने पर 'बुलेट ट्रेन ने ऐसी स्पीड पकड़ी... ऐसी स्पीड पकड़ी कि...संकल्प पत्र बाहर ही चली गई', कृष्णपाल गूजर तथा सीमा त्रिखा द्वारा भ्रष्टाचार व भ्रष्टाचारियों को संरक्षण देने के आरोप पर 'भ्रष्टाचारी-भ्रष्टाचार (फ्रेंडस्) ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे...तोड़ेंगे दम मगर...तेरा साथ न छोड़ेंगे', मोदी जी द्वारा स्वच्छता अभियान के तहत शौचालय बनवाने के अभियान पर 'सर! थोड़ा हिसाब से खाओ...इस गांव में शौचालय नहीं है...वोट', 'देश के तीन-तीन ईमानदार व्यक्ति- मैं बलात्कार के खिलाफ़ हूं (आसाराम), मैं काले धन के खिलाफ़ हूं (बाबा रामदेव) तथा मैं चोरी और भ्रष्टाचार के खिलाफ़ हूं (मोदी)', पिछले लोकसभा चुनावी घोषणा पत्र में मोदीजी के झूठे वादों पर 'फ़िर से कहो ना साहेब-स्विस बैंक, काला धन, 15 लाख, अच्छे दिन, गुजरात मॉडल, 2 करोड़ रोजगार, सस्ता पैट्रोल-सस्ती गैस तथा सबका साथ सबका विकास,' मालेगांव धमाके की आरोपी प्रज्ञा ठाकुर को लोकसभा चुनाव के लिये भाजपा प्रत्याशी घोषित करने पर 'प्रज्ञा ठाकुर को समर्थन न करने की घोषणा के बाद पलटी मारकर भाजपा को वोट देने की अपील करने की योग मुद्रा पर 'एन ओ (नो)-एनएएमओ (नमो)', विपक्षी दलों द्वारा गठबंधन करने पर '(42 दलों की एनडीए) हमारे एक शेर का मुकाबला करने के लिये सारे विपक्षी एकजुट हो रहे हैं-पैर की फ़ोटो लेना मना है' तथा 'वंशवाद के विरोध में पैराशूटर वीरेन्द्र सिंह!-पैराशूट प्रत्याशी (कुलदीप)-पार्टी को हर जगह एयर स्ट्राइक की आदत हो गई है' कार्टूनों द्वारा भाजपा व मोदी की नीतियों व कार्यशैली पर उपयुक्त कटाक्ष किया गया है।